eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

ग्रामीण आधारभूत संरचना और आत्मनिर्भर भारतः अवसर और चुनौतियॉ (कृषि क्षेत्र के विशेष परिप्रेक्ष्य में)

[1]डॉ0 मुहम्मद फुरकान
[2]श्री हीरालाल

[1]सहायक प्रोफेसर, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी उ0प्र0
[2]असिस्टेंट प्रोफेसर, राजकीय महिला महाविद्यालय, झाँसी, उ0प्र0

Received: 01 July 2021, Accepted: 17 July 2021, Published with Peer Review on line: 10 Sep 2021

Abstract

चीन के वुहॉन शहर से निकला कोरोना वायरस ने सम्पूर्ण विश्व को सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक रूप से प्रभावित किया है। इस रहस्मयी महामारी ने विश्व भर में बहुत तेजी से लोगो को अपनी चपेट में लिया है। विभिन्न देशो ने इसके बृहत पैमाने पर फैलने से रोकने के लिए विश्व स्वास्थ्य संगठन की सलाह और दिशा निर्देशो के अन्तर्गत लॉकडाउन (तालाबंदी) जैसा प्रभावी कदम उठाया गया। इस तालाबंदी के कारण समस्त संसार ठहर सा गय ाथा। लोगो को घर में कई दिनो तक कैद रहना पडा, समस्त सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियॉ ठप्प हो गयी। देश की सरकार बचाव एवं राहत कार्यो में संलग्न रही जिसके कारण देश में विभिन्न चुनौतियॉ उभर के सामनें आयी और जिनका सामना करना देश के लिए वर्तमान परिदृश्य में कठिन है।

इस महामारी ने हमारी बहुत सी कमजोरियो को उभारने में भी मदद की और देश की सरकार ने सबक लेते हुए बहुत तेजी से इन कमियो को दूर करने हेतु कुछ महत्वपूर्ण कदम भी उठाए। इस कोरोना महामारी के कठिन समय में कृषि क्षेत्र ने अपनी भूमिका का निर्वहन बखूबी से निभाया। देश के कृषको ने लगातार खाद्य सामग्री की आपूर्ति बनाये रखी जिससे लोगो को बहुत राहत मिली। कृषि क्षेत्र अगर देश में मजबूत नही होता तो न जाने कितने लोग भूख से मर जाते। जहॉ अर्थव्यवस्था के समस्त क्षेत्रो की प्रगति इस दौरान नकारात्मक रही वही कृषि क्षेत्र की प्रति सकारात्मक रही है और इस कारण भावी परिदृश्य में कृषि क्षेत्र में अपार अवसर दिखाई दे रही है। ग्रामीण आधारभूत संरचनाओ को मजबूत कर कृषि क्षेत्र में व्याप्त संभावनाओ को अवसर में बदला जा सकता है।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

Keywords:- ग्रामीण आधारभूत संरचना, आत्मनिर्भर भारत, अवसर और चुनौतियॉ, कृषि क्षेत्र का विशेष परिप्रेक्ष्य, सरकार की प्रतिबद्धता।

Introduction

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात से ही कृषि क्षेत्र के विकास के प्रति हमारे देश की सरकार प्रतिबद्ध रही है क्योकि कृषि क्षेत्र लोगो की जीविकोर्पाजन का एक प्रमुख साधन था और देश की 65 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या रोजगार हेतु इस पर निर्भर थी। देश के आर्थिक विकास के विभिन्न मॉडलो में कृषि क्षेत्र को सर्वोपरि स्थान दिया गया।

देश जहॉ लोगो की खाद्यान्न आवश्यकताओ को पूरा करने में असमर्थ था देश के कृषि वैज्ञानिको ने अपने अथक प्रयासो से सत्तर के दशक में हरित क्रांति लाई गयी जिससे देश में खासकर गेहूँ की पैदा में अच्छी वृद्धि सामने आयी और उसके कारण ही देश खाद्यान्न के मामले में आज आत्मनिर्भर होने के साथ खाद्यान्न निर्यातक देशो में गिना जाने लगा है। कोविड–19 महामारी में किसानो ने खाद्य सामग्री की आपूर्ति को बनाये रखा और लोगो की आवश्यकताओ को पूरा करने हेतु निःस्वार्थ भाव से कार्य किया।

डॉक्टर, नर्स, पुलिस बल, प्रशासन एवं सफाई कमिर्यो के साथ–साथ किसान भी इस संकट में एक योद्धा के रूप में निरंतर लडाई लड रहे है। देश में अधिकतर उत्पादन वाली गतिविधियॉ जहॉ बिल्कुल थम सी गई है वही किसानो ने अपने खेतो में फसलो की कटाई की है और वर्तमान में अगली फसल की तैयारी कर रहे है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनः पटरी पर लाने हेतु हमें अपने आधारभूत ढाँचे में सुधार करना होगा और वहॉ विधमान मानवीय संसाधनो के कुशलतम उपयोग हेतु काम करना होगा जिससे कृषि क्षेत्र के विकास का आधार बनाने और कृषि क्षेत्र में व्याप्त विभिन्न अवसर को मूर्तरूप दिया जा सके।

सूक्ष्म ,कुटीर, लधु, एवं माध्यम प्रकार के उद्योगो की आधारशिला कृषि ही है और ये उद्योग ग्रामीण अर्थव्यवस्था के केन्द्र बिन्दु है। ढॉचागत विकास की परिपाटी पर इनको पुनः स्थापित कर भारत को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में अग्रसर किया जा सकता है।

पूर्व साहित्य का सर्वेक्षण :–

विक्रान्त सिंह , कोविड –19 : "चुनौतियों के बीच कृषि क्षेत्र की संभावनाए", कोरोना और किसान भाग –5 में कोविड–19 महामारी के चलते हो रहे नुकसान से किसानो को कैसे बचाया जाएं ?, वे कौन

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

से कदम उठाए जाने चाहिए जिससे कृषि संकट से किसानो को उभारा जा सके आदि बातो को अपने लेख में प्रमुखता से रेखांकित किया है।

सिराज हुसैन, कोरोना वायरस और लॉकडाउन : "आखिर देश का किसान किस–किस से लडे" शीर्षक में लॉकडाउन के कारण किसानो को कृषि कार्यो को करने में आयी विभिन्न कठिनाईयो और समस्याओ पर प्रकाश डाला है।

विवेक कुमार राय, कोरोना के दौर में किसानो की समस्याएं तथा उनके उपाय विषय पर किसानो के समक्ष उत्पन्न विभिन्न समस्याओ और उनसे निपटने हेतु उपलब्ध उपायो पर चर्चा की है जिससे किसानो को मदद मिल सके।

शोध पत्र के उददेश्य :– वर्तमान शोध पत्र के निम्न उददेश्य है।

- कोरोना कालावधि में महामारी का कृषि क्षेत्र पर प्रभाव का अध्ययन।
- ग्रामीण आधारभूत संरचना को स्थापित करने में लगी योजनाओ का अध्ययन।
- कृषि क्षेत्र में व्याप्त संभावनाओ से आत्मनिर्भर भारत बनाने में दिशा में सूक्ष्म, लधु एवं मध्यम उद्योगो की भूमिका का अध्ययन।

शोध कियावधि :– वर्तमान शोध पत्र की प्रकृति विवरणात्मक है और सामग्री एवं समंको का संकलन द्वितीयक स्रोतो पर आधारित है जिसमें विभिन्न लेख, पुस्तको, समाचार–पत्रो, एवं इन्टरनेट बेबसाइट का सहारा लिया गया है।

कोरोना कालावधि में कृषि क्षेत्र पर प्रभाव :– कोरोना वायरस (कोविड–19) ने अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रो के समक्ष एक संकटपूर्ण चुनौति उत्पन्न की है जिसमें से कृषि क्षेत्र भी एक है। कृषि क्षेत्र का अर्थव्यवस्था में योगदान लगभग 17 प्रतिशत है और कृषि विकास दर 2.8 प्रतिशत है। लॉकडाउन के कारण किसानो आर्थिक चुनौतियों एवं समस्याओ का सामना करना पडा। लम्बे समय से किसान प्राकृतिक आपदाओ जैसे असमय वर्षा, ओलावृष्टि, तेज तूफान, अम्लीय वर्षा, बाढ, कोहरा एवं पाला आदि संकट का सामना पहले से ही कर रहा था और इस बीच कोराना महामारी के आने से किसानो और गहरे संकट में धकेल दिया जिससे उभरना किसानो को काफी मुश्किल होगा। कोरोना काल से पहले और बाद के वर्षो में कृषि और संमद्ध क्षेत्र में मूलभूत कीमतो पर सकल मूल्य वृद्धि, प्रतिशत में तालिका कमांक 01 प्रदर्शित किया गया है।

तालिका कमाँक– 01

कृषि और संमद्ध क्षेत्र में मूलभूत कीमतो पर सकल मूल्य वृद्धि (प्रतिशत में)

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

वर्ष	सकल मूल्य वृद्धि
2017–18	5.9
2018–19	2.4
2019–20	4.00
2020–21	3.4

स्रोत– आर्थिक समीक्षा 2020–21

तालिका क्रमाँक 01 में कृषि और संमद्ध क्षेत्र में मूलभूत कीमतो पर सकल मूल्य वृद्धि (प्रतिशत में) में दर्शाया

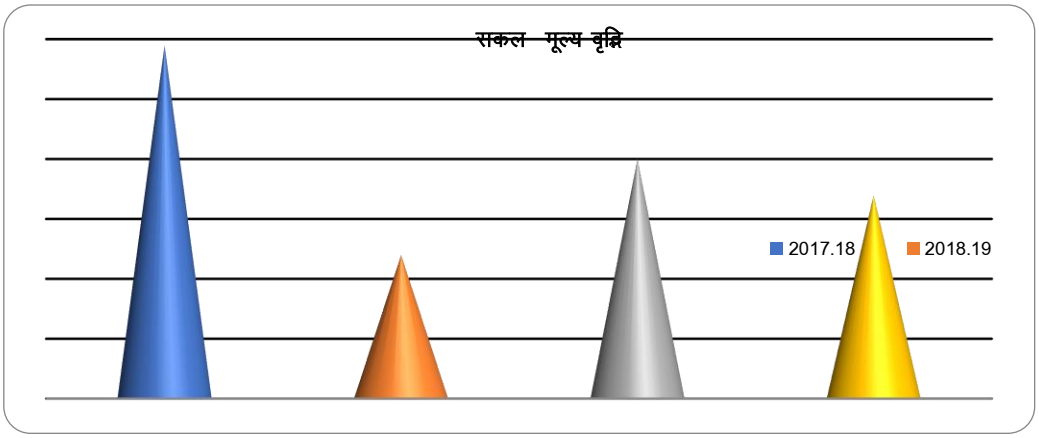

गया है। वित्तीय वर्ष 2017–18 में कृषि और संमद्ध क्षेत्र में मूलभूत वृद्धि 5.9 और 2020–21 में 3.4 प्रतिशत रही।

कोरोना कालावधि में कृषि क्षेत्र पर पडे प्रभाव को निम्न बिंदुओ द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है–

- कोरोना वायरस के कारण लॉकडाउन से बागवानी, सब्जियॉ, फल, दूध, मुर्गीपालन, मधुमक्खी, मत्स्य पालन जैसे कृषि जनित कार्यो में संलग्न किसानो को भारी नुकसान का सामना करना पडा।
- तैयार खडी रबी की कटाई में मजदूरो के अभाव में तथा मजदूरी की समुचित व्यवस्था न होने के कारण किसानो को नुकसान का सामना करना पडा।
- माँग के अभाव में तथा परिवहन की व्यवस्था न होने से किसानो की फसले खराब गयी या किसानो ने स्वंय ही नष्ट कर दी जिससे किसानो को भारी मात्रा में आर्थिक नुकसान का सामना करना पडा।
- ग्रामीण क्षेत्रो में कृषि उपज को भण्डारण करने हेतु समुचित व्यवस्था के अभाव के कारण कृषको को अपनी उपज को कम मूल्य पर बेचने हेतु मजबूर होना पडा।

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

- ❖ पर्याप्त आय के अभाव में लिए गये ऋण अदायगी की किस्त ना देने से किसानो के आर्थिक ऋण भार में वृद्धि का सामना करना पडा।
- ❖ चाय, कॉफी, कपास, और चावल का निर्यात अवरूद्ध होने के कारण किसानो को इन फसलो के उचित मूल्य न मिलने से काफी हानि उठानी पडी।

उपर्युक्त बिन्दुओ से स्पष्ट है कि कृषि क्षेत्र पर कोरोना महामारी का प्रभाव नकारात्मक पडा और कृषको को आर्थिक हानि उठानी पडी जो निश्चित ही उनके लिए कंगाली में आटा गीला होना कहावत को सच करती है क्योकि किसान पहले से ही विभिन्न आपदाओ से घिरा था, कर्ज लगातार बढ रहे थे, कर्ज के बोझ से किसानो में आत्महत्याएं बढ रही थी।

ग्रामीण आधारभूत संरचनाओ को स्थापित करने में लगी योजनाएं :–

किसी भी आर्थिक इकाई की सफलता उस क्षेत्र में स्थापित आधारभूत संरचना के ढाचे पर बहुत कुछ निर्भर करती है। आधारभूत संरचनाओ के अन्तर्गत परिवहन के साधन, जल की पर्याप्त आपूर्ति, वित्तीय संस्थाओ की स्थिति, सस्ता श्रम, कच्चे माल की उपलब्धत इत्यादि को शामिल किया जाता है। ग्रामीण क्षेत्रो में आधारभूत संरचनाओ का प्रायः अभाव पाया जाता है लेकिन नब्बे के दशक में **उदारीकरण, भूमण्डलीकरण और निजीकरण** जैसे बडे आर्थिक सुधारो को अपनाने के बाद से देश में ग्रामीण क्षेत्रो में आधारभूत संरचना को मजबूत करने हेतुं महत्वपूर्ण कदम उठाये गए, जिससे ग्रामीण क्षेत्रो का विकास तेजी से हुआ है। भारत निर्माण कार्यक्रम और **प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना** ने गाँवो के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वित्त वर्ष 2012–13 में इस योजना के लिए बजट व्यय 7,884 और 2013–14 में 8,685 तथा 2014–15 में 4,529 करोड रूपये का आवंटन किया गया। **भारत निर्माण कार्यक्रम** ग्रामीण इलाको विकास के लिए बनाया गया एक कार्यक्रम या योजना है जिसके अन्तर्गत सिंचाई, ग्रामीण आवास, सडक, जल प्रदाय, संचार तथा विद्युतीकरण आदि के क्षेत्र में विकास कार्य किए जाते है। 2005 में महात्मा गाँधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारण्टी अधिनियम ने ग्रामीण क्षेत्रो में रोजगार सृजन के साथ ग्रामीण आधारभूत संरचना से सबंधित कार्य किए जाते है। प्रधानमंत्री ग्राम सडक योजना के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण सडको का निर्माण किया जा रहा है। एकीकृत जलग्रहण प्रबंधन कार्यक्रम भूमि की अत्पादकता में सुधार लाने के लिए संचालित किया जा रहा हैं। वित्तीय वर्ष 2016–17 के बजट ग्रामीण विकास विभाग की प्रमुख योजनाओ के लिए 86,000 करोड रूपये का प्रावधान किया गया और वित्तीय वर्ष 2017–18 के बजट में 1,05,447.88 करोड रूपये का

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

प्रावधान किया गया है। आदर्श ग्रामो के लिए सांसद आदर्श योजना के माध्यम से भी ग्रामीण इलाको में विकास कार्य किए जा रहे हैं।

कृषि क्षेत्र में व्याप्त संभावनाओ से आत्मनिर्भर भारत बनाने की दिशा में सूक्ष्म, लघु, एवं मध्यम उद्यम इकाईयों की भूमिका :–

कोविड–19 महामारी से उत्पन्न से उत्पन्न चुनौतियो से निपटने और भविष्य को ध्यान में रखते हुए माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के लोगो से **लोकल से वोकल** के माध्यम से देश को आत्मनिर्भर बनाने के आहवान किया। देश के लोगो की समस्त आवश्यकताओ की पूर्ति हेतु हमें अपने यहॉ वस्तुओ एवं सेवाओ का उत्पादन करना होगा। लोगो को विदेशी वस्तुओ एवं सेवाओ के प्रयोग की जगह स्वदेशी वस्तुओ एवं सेवाओ को प्राथमिकता देना होगा। कोविड–19 महामारी ने हमें आत्मनिर्भर बनने का अवसर प्रदान किया है और देश के लोगो ने इस दौरान साबित भी कर दिया है कि जिन वस्तुओ और सेवाओ का उत्पादन हमारे यहॉ बिल्कुल शून्य था हमने उनका उत्पादन किया और देश के लोगो की आवश्यकताओ की मांग के अनुरूप करके दिखाया है। कृषि पर आधारित सूक्ष्म, लघु, एवं मध्यम उद्योगो का समुचित विकास कर देश को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा कार्य किया जा सकता है।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाईयो का ग्रामीण एवं शहरी वितरण को तालिका क्रमॉक–02 में प्रदर्शित किया गया है–

तालिका क्रमॉक– 02

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाईयो का ग्रामीण एवं शहरी वितरण

क्षेत्र	सूक्ष्म	लघु	मध्यम	कुल	प्रतिशत भाग
1	2	3	4	5	6
ग्रामीण	324.09	0.78	0.01	324.88	51
शहरी	306.43	2.53	0.04	309.00	49
कुल	630.52	3.31	0.05	633.88	100

स्रोत– वार्षिक रिपोर्ट 2020–21 सूक्ष्म, लषु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका क्रमॉक–02 में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाईयो का वितरण को दर्शाया गया है।

केंद्रीय मंत्री श्री नितिन गडकरी ने कहा है कि सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय एक कृषि एमएसएमई नीति पर काम कर रहा है। जो स्थानीय कच्चे माल का उपयोग करते हुए विनिर्माण उत्पादो के लिए ग्रामीण, जनजातीय, कृषि और वन क्षेत्रो में उद्यमिता विकास पर ध्यान केंद्रित करेगी। उन्होने इस दौरान कहा कि कोरोना वायरस की वजह से जापान, फ्राँस, जर्मनी, ब्रिट्रेन आदि देश

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

चीन से निवेशो को बाहर निकालने और अन्यत्र जगह स्थानांतरित करने के लिए अपने अपने उद्योगो विशेष आर्थिक पैकेज देने की पेशकश कर रहे है ऐसे में भारत के लिए इन्हे अपने यहॉ निवेश करने के लिए आकर्षित करने का एक सुनहरा अवसर है जिसे भारत को खोना नही चाहिए। भारत के कृषि क्षेत्र में तमाम कमियो होने के बावजूद समद्व क्षेत्र है जिसमें सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम आकार के उद्यमो को गति देने की क्षमता विद्यमान है।

भारत में कृषि आधारित उद्योगाो को तीन श्रेणिये में बांटा जा सकता है–

1– फल एवं सब्जी प्रसंस्करण इकाइयॉ, डेयरी संयत्रो, मत्स्य पालन, मुर्गीपालन, मधुमक्खी पालन, चावल मिलो, दाल मिलो आदि इकाइयॉ आती है।

2– चीनी, बेकरी, साल्वेंट निष्कर्षण, कपडा आदि इकाइयॉ आती है।

3– कृषि, कृषि औजार, बीज, सिंचाई उपकरण, उर्वरक, कीटनाशक आदि इकाइयॉ आती है।

सूक्ष्म, लघु एवं मघ्यम उद्यम में रोजगाार के वितरण की स्थिति को तालिका क्रमॉक 03 में दर्शाया गया है–

तालिका क्रमॉक–03

सूक्ष्म, लघु एवं मघ्यम उद्यम में रोजगाार के वितरण

क्षेत्र	सूक्ष्म	लघु	मध्यम	कुल	प्रतिशत भाग
1	2	3	4	5	6
ग्रामीण	489.30	7.88	0.60	497.78	45
शहरी	586.88	24.06	1.16	612.10	55
कुल	1076.19	31.95	1.75	1109.89	100

स्रोत– वार्षिक रिपोर्ट 2020–21 सूक्ष्म, लषु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार

तालिका क्रमॉक–03 में सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम इकाईयो में रोजगार की स्थिति को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के आधार पर दर्शाया गया है जिसमें ग्रामीण क्षेत्र में कुल रोजगार 497.78 एवं 612.10 शहरी क्षेत्र में रहा।

निष्कर्ष–: कोरोना अवधि में कृषि और सूक्ष, लघु, एवं मध्यम उद्यम इकाईयो पर प्रभाव नराकारात्मक पडा लेकिन यह भी सत्य है कि इन दोनो क्षेत्रो के लिए यह काल अवसर लेकर भी आया है। हमें यह नही भूलना चाहिए कि कृषि क्षेत्र हमेशा से ही देश के आर्थिक विकास के द्रष्टिकोण से महत्वपूर्ण रहा है। कोरोना अवधि में कृषि क्षेत्र एक मात्र क्षेत्र रहा है जिसकी विकास दर में वृद्वि देखी गयी और

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 4, Issue 02, July 2021

साथ ही देश की बडी आबादी की खाद्यान्न सम्बंधी आवश्यकताओ की पूर्ति को निर्बाध गति से बनाये रखा जो निश्चित ही आपदा के समय में इसके महत्व को रेखांकित करता है। सूक्ष्म, लधु और मध्यम उद्योगो को सरकार द्वारा दिया गया आर्थिक पैकेज ने श्रमिको को रोजगार पर पुनः लौटने के लिए प्रोत्साहन का कार्य किया।

अतः कृषि और सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम इकाईयो पर उद्यमो के विकास के लिए सरकार और निवेशकर्ता सही दिशा में कार्य योजनाओ का निर्माण कर उनका क्रियान्वयन कार्य किया जाना चाहिए जिससे कृषि आधारित उद्योग भारत को आत्मनिर्भर बनाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन कर सके और आर्थिक विकास की गति को तेज करने में सहायक सिद्व हो सके।

संदर्भ सूची–:

- डॉ. लाल एस. एन.,, शिवम "भारतीय अर्थव्यवस्था" पब्लिसर्स हाउस, इलाहाबाद।
- सिन्हा वी. सी., "भारतीय अर्थव्यवस्था" एस. वी. पी. डी. पबिलकेशन आगरा।
- विक्रान्त सिंह , कोविड –19 : "चुनौतियों के बीच कृषि क्षेत्र की संभावनाए", कोरोना और किसान भाग –5।
- सिराज हुसैन, कोरोना वायरस और लॉकडाउन : "आखिर देश का किसान किस–किस से लडे"।
- विवेक कुमार राय, कोरोना के दौर में किसानो की समस्याएं तथा उनके उपाय।
- आर्थिक समीक्षा 2020–21 वित्त मंत्रालय भारत सरकार।
- वार्षिक रिपोर्ट 2020–21 सूक्ष्म, लषु एवं मध्यम उद्यम मंत्रालय, भारत सरकार।
- https://www.panchayat.gov.in
- https://pib.gov.in
- https://www.indiabudget.gov.in